भगत नामदेव - सबद १२
गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥
रागु धनासरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९२

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥
मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥१॥
हमरो करता रामु सनेही ॥
काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥
बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥
सरब सुइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥
कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥
दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥
क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥४॥१॥

सार: भौतिक वस्तुओं का जमा करना नियंत्रण का आभास दे सकता है, परंतु वह भीतर की गहरी अस्थिरता को शांत नहीं कर पाता क्योंकि वह निरंतर बदलती परिस्थितियों पर निर्भर रहता है। इसके विपरीत, ज्ञान, संपत्ति पर नहीं बल्कि समझ पर आधारित होता है। भीतर की जड़ों से जुड़ा होने के कारण वह परिवर्तित परिस्थितियों में भी स्थिर रहता है। स्वामित्व एक भ्रम है, धन और शक्ति स्थायी पहचान प्रदान नहीं कर सकते। धन खो सकता है और शक्ति क्षीण हो सकती है परंतु ज्ञान निरंतर मार्गदर्शन, परिष्कार और स्थिरता प्रदान करता रहता है। वह समय के साथ आगे बढ़ता है, किसी स्वामित्व की वस्तु के रूप में नहीं बल्कि ऐसे अनुभव के रूप में जिसे हमने जिया हो।

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥
गहरी नींव खोदकर, उनपर महलों का निर्माण किया जाता है। यह प्रतीक है कि कैसे अहंकार ऐसे भ्रम रचता है जो वास्तविक लग सकते हैं और यह भावना पैदा करते हैं कि जीवन स्थायी और सुरक्षित है।

मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥१॥
क्या मार्कण्डेय से भी महान कोई है, वह पौराणिक ऋषि जिसने एक साधारण से कर्म द्वारा अपने सिर पर मंडरा रहे संकट को टाल दिया था। यह संकेत करता है कि भौतिक संम्पत्ति सुरक्षा की गारंटी नहीं देता जबकि ज्ञान युगों-युगों तक बना रहता है। (१)

हमरो करता रामु सनेही ॥
मेरा रचयिता वह सर्वव्यापी ऊर्जा है जो मेरे भीतर प्रिय रूप में विद्यमान है। यह संकेत करता है कि हमारी अंतरात्मा हमारी निरंतर साथी है, वह शक्ति जो हमारे विचारों को आकार देती है।

काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥
हे मनुष्य, तुम किसलिए घमंड करते हो जबकि यह शरीर नश्वर, असत्य है और अंततः मिट जाने वाला है। यह विनम्रता और अहंकार के बीच के अंतर को उजागर करता है, विनम्रता जो हमारी नश्वरता को स्वीकार करती है और अहंकार जो हमारे अनिवार्य शारीरिक पतन की उपेक्षा करता है। (१)(विराम)

मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥
'मेरा और हमारा' का दावा करके कौरव, अपने भाई दुर्योधन जैसे बन गए। महाभारत महाकाव्य से लिया गया यह उदाहरण इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे मोह और अधिकार-भावना हमारी विवेक-बुद्धि को धुंधला कर सकते हैं और अंततः विनाश का कारण बन सकते हैं।

बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥
जबकि उनपर विशाल तम्बू के छत्र होते थे, फिर भी उनके शरीर गिद्धों का आहार बन गए। यह कड़वी सच्चाई दिखाती है कि नश्वरता के अटल नियम के सामने पद-प्रतिष्ठा और जमा-पूंजी सब नष्ट हो जाते हैं। (२)

सरब सुइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥
भले ही किसी के पास लंका जैसा सोने का मशहूर शहर हो और वह उसके शासक, रावण से भी बढ़कर हो। यह उदाहरण हमें याद दिलाता है कि केवल धन और सत्ता ही किसी को सच्ची व स्थायी पहचान नहीं दे सकते।

कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥
द्वार पर बंधे हाथियों का क्या हुआ? पलक झपकते ही, वह सब कुछ जो अपना समझता था, उससे छीन लिया गया। यह एक महत्वपूर्ण सच्चाई को उजागर करता है, स्वामित्व एक भ्रम है, जो कुछ हमारे पास है, वह पल भर में ग़ायब हो सकता है और कोई और उस पर अपना अधिकार जमा सकता है। (३)

दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥
दुर्वासा ऋषि को छलने के कारण, यादवों को ऐसे बुरे परिणाम भुगतने पड़े। यह पौराणिक कथा दर्शाती है कि अहंकार और छल-कपट विनाश की ओर ले जाते हैं और यह बात रेखांकित करती है कि हमारे हर कर्म के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥४॥१॥

विनम्र नामदेव कहते हैं कि जब भीतर ईश्वरीय कृपा जागी तब उन्होंने उस सर्वव्यापी शक्ति की उपस्थिति को व्यक्त किया। इसका अर्थ यह है कि सच्चा बदलाव तब शुरू होता है जब हमारे भीतर उस परम-एकता को ग्रहण करने की भावना जागृत होती है। (४)(१)

तत्त्व: भगत नामदेव बहुत सशक्त ढंग से यह व्यक्त करते हैं कि जब हम अपनी भीतरी कृपा के प्रति जागृत होते हैं तब हमारे अंतर में गहन विनम्रता का भाव उत्पन्न होता है, यही विनम्रता हमें अपने चारों ओर व्याप्त सर्वव्यापी ऊर्जा को महसूस करने में सक्षम बनाती है। हमारी अंतरात्मा हमारी अटूट साथी बन जाती है, ऐसी शक्ति का स्वरुप जो हमारे विचारों को आकार देती है और भीतर से ही हमारी समझ को सही दिशा दिखाती है। यह रूपांतरण की यात्रा तब शुरू होती है जब हम अलगाव के भ्रम को पहचानकर एकता को अपनाते हैं और जीवन के हर पहलू में निहित ज्ञान को ग्रहण करने के लिए स्वयं को खोल देते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com